11

विद्यालयी शिक्षा में नेतृत्व सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक

मीता गुप्ता*

विद्यालयी शिक्षा में नेतृत्व एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है जो विद्यालय की शैक्षिक गुणवत्ता, वातावरण और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को प्रभावित करता है। एक कुशल नेतृत्वकर्ता सकारात्मक सोच, नवाचार, समावेशी दृष्टिकोण और सहभागिता पर आधारित कार्यशैली के माध्यम से विद्यालय को उत्कृष्टता की ओर अग्रसर करता है। प्राचार्य का प्रभावी नेतृत्व न केवल शिक्षकों और शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को प्रेरित करता है, बल्कि विद्यार्थियों के अनुभवों, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और विकासात्मक आवश्यकताओं को समझते हुए एक सहयोगात्मक अधिगम संस्कृति विकसित करता है। इस लेख में अच्छे लीडर के गुण, जैसे— खुलापन, कर्तव्यनिष्ठा, सहमतता, बहिर्मुखता, नवाचारशीलता, प्रेरक दृष्टिकोण आदि पर विस्तार से चर्चा की गई है। साथ ही, नेतृत्व से संबंधित व्यावहारिक अनुभवों, समस्याओं के समाधान, सामुदायिक सहभागिता, वित्तीय प्रबंधन और समूह निर्माण की रणनीतियों को भी रेखांकित किया गया है। केस स्टडी के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि प्रभावशाली नेतृत्व कैसे सामाजिक और भौतिक बाधाओं को पार कर विद्यालय में नवाचार और गुणवत्ता की स्थापना कर सकता है। यह लेख विद्यालय प्रमुखों के लिए व्यावहारिक मार्गदर्शिका के रूप में उपयोगी सिद्ध होगा।

नेतृत्व का गुण किसी व्यक्ति में सकारात्मक सोच, कार्य के प्रति समर्पण, उसे अंतिम बिंदु तक पहुँचाने की प्रतिबद्धता तथा कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न करने की क्षमता के माध्यम से विकसित होता है। एक सक्षम नेतृत्व, सहज एवं सरल कार्यविधियों के माध्यम से संस्थान को नवाचारी प्रयासों द्वारा नए क्षितिज की ओर अग्रसर करता है तथा उसे नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सहायक होता है। ऐसे नेतृत्व के दिशानिर्देशों का पालन अधीनस्थ कर्मचारी उत्साहपूर्वक करते हैं।

कुशल नेतृत्व सभी की सहभागिता सुनिश्चित करते हुए कार्यों के सर्वोत्कृष्ट परिणाम प्राप्त करने में सफल रहता है। वास्तव में, विद्यालय नेतृत्व की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि एक प्रभावी नेतृत्व अपने सहकर्मियों को सतत उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रेरित करता है। वह शिक्षकों, शिक्षणेत्तर

*प्राचार्या, एस.सी.ई.आर.टी.,राज्य शिक्षा केंद्र, मध्य प्रदेश 962011

कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों को निरंतर प्रोत्साहित करता है।

परिणामस्वरूप, विद्यालय के शैक्षिक वातावरण में गुणात्मक वृद्धि होती है और विद्यालय अपने क्षेत्र में एक विशिष्ट पहचान स्थापित करता है।

किसी शिक्षण संस्थान में प्राचार्य अपने नेतृत्व के माध्यम से ऐसी विद्यालयी संरचना विकसित करता है जो शैक्षिक वातावरण को इस प्रकार रूपांतरित करती है कि वह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सतत प्रेरित कर सके। ऐसा शैक्षिक नेतृत्व निरंतर प्रयोगों, नवाचारों एवं परिवर्तनों को प्रोत्साहित करता है। एक नवाचारी नेतृत्व बाल-केंद्रित परिवर्तन और रूपांतरण की उस दृष्टि को आकार देता है, जो समावेशी एवं प्रगतिशील समाज की आधारशिला बन सके।

यह नेतृत्व न केवल संस्थान के भीतर शैक्षिक गुणवत्ता को सुदृढ़ करता है, बल्कि शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों, अभिभावकों और समुदाय के साथ सहभागिता के माध्यम से एक सहयोगात्मक शैक्षिक संस्कृति का निर्माण करता है।

विद्यालय नेतृत्व का महत्व

एक अध्यापक विद्यार्थियों को केंद्र में रखते हुए निरंतर शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं का सृजन और पुनःसृजन करता है। ऐसे में विद्यालय नेतृत्वकर्ता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, जो अध्यापकों को प्रभावकारी ढंग से शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं के संचालन हेतु उपयुक्त वातावरण प्रदान करता है। विद्यालय नेतृत्व न केवल सीखने के लिए पर्याप्त संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करता है, बल्कि विद्यालय में एक समृद्ध अधिगम संस्कृति के निर्माण हेतु सक्रिय प्रयास करता है। वह एक ऐसा सहभागी दल तैयार करता है, जो 'प्रत्येक बच्चे की सफलता' के साझा विजन के साथ कार्य करता है और दूसरों में भी नेतृत्व क्षमता के विकास को बढ़ावा देता है। इसके साथ-साथ, वह शिक्षकों के व्यावसायिक विकास और क्षमताओं के उन्नयन में भी सहायक होता है।

संक्षेप में कहा जाए तो, एक सफल विद्यालय नेतृत्वकर्ता सहभागी दृष्टिकोण विकसित करता है, अध्यापक एवं विद्यार्थियों के लिए स्पष्ट और प्राप्तिक योग्य लक्ष्य निर्धारित करता है, सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में निरंतर सुधार सुनिश्चित करता है, तथा विद्यार्थी अधिगम को केंद्र में रखते हुए संस्थान की प्रगति सुनिश्चित करता है।

विद्यालय में नेतृत्व कैसे करें—विद्यालयी शिक्षा में नेतृत्व करने हेतु कुछ आवश्यक दशाएँ

स्व-चिंतन से मार्ग खोजना— इस भूमिका में आपको स्वयं के और दूसरों के सतत अधिगम एवं विकास हेतु अवसर खोजने होते हैं। एक नेतृत्वकर्ता को सर्वप्रथम जीवंत नेतृत्व प्रदर्शित करने के लिए 'स्व' में निवेश करना अनिवार्य है। स्वयं के विकास को आत्म-चिंतन, जो कि स्वाध्याय का एक प्रभावी तरीका है, के माध्यम से विकसित किया जा सकता है। ऐसा करने से किसी चुनौती का सामना होने पर 'हाँ, मैं कर सकता हूँ/हाँ, मैं कर सकती हूँ' का दृष्टिकोण विकसित होता है। परिणामस्वरूप, स्वयं व विद्यालय का रूपांतरण संभव हो पाता है। जैसे— अधिगम का वातावरण कैसे निर्मित होगा, किन-किन कार्यों को करने से सकारात्मक परिणाम प्राप्त होंगे?

इसके लिए स्व-चिंतन के माध्यम से विद्यालय को उन्नत करने हेतु कार्यों के मार्ग खोजने होंगे और किसी बड़े कार्य को करने के लिए छोटी-छोटी क्रियाओं का एक मैप बनाना होगा। इस रोडमैप की कार्यविधियों को क्रियान्वित करने हेतु विद्यालय, शिक्षक और समुदाय— सभी को जवाबदेह बनाना होगा।

अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों के अनुभवों को जोड़ना— यह भूमिका उनकी विकासात्मक आवश्यकताओं को जानने एवं विभिन्न अनुभवात्मक अधिगम गतिविधियों के माध्यम से उनकी आवश्यकताओं को समझने के लिए शिक्षकों व विद्यालय प्रमुखों में संवेदनशीलता विकसित करने की कोशिश करती है। यदि शिक्षक अपने विद्यार्थियों के पूर्व अनुभवों को समझेंगे, तो वे अपनी कक्षा की अधिगम प्रक्रिया का नेतृत्व करने में सफल होंगे। इससे प्रत्येक विद्यार्थी स्वयं को अनोखा, महत्वपूर्ण और सम्मानित महसूस करेगा। अतः विद्यार्थियों के अनुभवों से अपने अनुभवों को जोड़कर पढ़ाने से सभी विद्यार्थियों की सीखने की गति बढ़ सकेगी और वे विद्यालय आने के लिए प्रेरित होंगे।

समूहीकरण करना— विद्यालय एक ऐसी इकाई है जिसे प्रभावी रूप से संचालित करने के लिए छोटे-छोटे समूहों का निर्माण एवं उनका नेतृत्व करना, विद्यालय प्रमुख की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। समूह के रूप में कार्य करने से न केवल विद्यालयी कार्य बेहतर ढंग से संपादित होते हैं, बल्कि विचारों के आदान-प्रदान और आने वाली समस्याओं व चुनौतियों से निपटने के नए तरीकों को सीखते हुए समूह के प्रत्येक सदस्य की क्षमताओं एवं कौशल का विकास भी होता है। जैसे— बाल कैबिनेट का गठन, विभिन्न हाउसों की स्थापना, विज्ञान/ओजस क्लब की संरचना आदि इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर की जाती है।

गठन करना— निष्कर्षतः संस्था प्रमुख एक परिवर्तनकर्ता की भूमिका में होता है। शिक्षकों की परिवर्तनकारी पहचान को महत्व दिया जाना चाहिए। अतः किसी बड़े परिवर्तन को लाने के लिए अपनी टीम को एस.एम.सी. (विद्यालय प्रबंधन समिति) से जोड़ना होगा, जिनके साथ अकादमिक चर्चाओं से नए कार्यों को करने के रास्ते पता चलेंगे। संस्था प्रमुख को अपने गाँव, बसाहट अथवा समुदाय में उन रिसोर्स पर्सनों की पहचान करनी होगी, जो क्षेत्र के लिए कुछ अच्छा करना चाहते हैं और शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। ऐसे लोगों को संगठित करके एस.एम.सी. का गठन करना होगा। यह समिति विद्यालय के उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। तकनीकी भाषा में एस.एम.सी. को विद्यालय का 'माइक्रोचिप' कहा जा सकता है, जो डिजिटल डिवाइस की तरह तकनीकी प्रक्रियाओं को नियंत्रित करता है। इसी प्रकार, विद्यालय से जुड़कर एस.एम.सी. के रिसोर्स पर्सन समस्त प्रक्रियाओं की निगरानी कर सकते हैं, उन पर विचार करके सहमति-असहमति व्यक्त कर सकते हैं तथा अपने विचारों से सभी समूहों में शिक्षकों और विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करके पथ-प्रदर्शक की भूमिका निभा सकते हैं।

समस्याओं को सुलझाना— नवाचारों का प्रयोग समस्याओं को सुलझाने के लिए किया जाना चाहिए। इसे विद्यालय में समावेशी तरीकों को प्रोत्साहित

करने के साधन के रूप में भी देखा जाना चाहिए। विद्यालयों को अधिगम संगठनों में बदलने के लिए विद्यालय में नवाचार की संस्कृति का निर्माण करना बहुत आवश्यक है। शिक्षण-अधिगम तथा विद्यालयी प्रक्रियाओं में नवाचारों के समावेश से माता-पिता और समुदाय के लिए भी सीखना एक आनंददायक अनुभव बन सकता है। जैसे— अपना रेडियो या अपना समाचार-पत्र तैयार करना ऐसी गतिविधियाँ हैं, जो माता-पिता को भी विद्यालय से जोड़ती हैं।

समुदाय की साझेदारी प्राप्त करना— विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे अपने-अपने अनुभवों के साथ विद्यालय आते हैं। यदि उनकी सामाजिक और भावनात्मक आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जाए तो वे विद्यालय से आसानी से जुड़ पाते हैं और बेहतर ढंग से सीख सकते हैं। विद्यालय संचालक उनके पालकों का विश्वास भी जीत सकते हैं। यह भूमिका विद्यालय प्रमुख को स्थानीय व्यक्तियों के साथ भागीदारी निर्मित करने में सहायता करती है, जिसमें समुदाय के सदस्य, माता-पिता और कार्यकर्ता सम्मिलित होते हैं।

वित्तीय प्रबंधन करना— विद्यालय के वित्तीय बजट और धन का उपयोग कैसे किया जाना चाहिए, यह विद्यालय प्रमुख को विद्यालय का नेतृत्व करते हुए जानना आवश्यक है, जिससे वह वित्तीय, भौतिक और मानव संसाधनों के उचित प्रबंधन के माध्यम से महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा कर सके। जैसे— कन्टिन्जेंसी फंड का उपयोग मरम्मत से लेकर अन्य संसाधनों की व्यवस्था हेतु किया जा सकता है, जिससे संस्था में स्वच्छ और व्यवस्थित वातावरण निर्मित किया जा सके।

प्रशासन का विश्वास जीतना— अपने विद्यालय की नई चुनौतियों को पहचानना होगा और उनके नवाचारी हल खोजने हेतु शिक्षकों तथा पी.एल.सी. व्यावसायिक अधिगम समुदाय को प्रोत्साहित करना होगा। इन नवाचारों के समाधान ढूँढ़ने में कई बार प्रशासन का सहयोग प्राप्त करना आवश्यक होता है, जिसमें स्थानीय पंचायत, पार्षद और नगर पालिका अध्यक्ष आदि प्रशासनिक व्यक्तियों से सहयोग लेना पड़ता है, ताकि विद्यालय की चुनौतियाँ सुलझाई जा सकें। जैसे— शौचालय, पेयजल व्यवस्था, स्वच्छता आदि।

अतः सबसे पहले विद्यालय प्रमुख को चुनौतियों के समाधान खोजने हेतु स्वयं की समझ बनानी होगी, तथा सभी से चर्चा करके क्रियाओं पर विचार एवं पुनर्विचार करते हुए छोटे-छोटे कार्य बिंदु तय करने होंगे। इन कार्य बिंदुओं पर सभी की समझ के अनुरूप रणनीति बनाते हुए कार्य सौंपने होंगे।

अच्छे नेतृत्वकर्ता के गुण

व्यक्तित्व के पाँच बड़े गुण होते हैं जो किसी नेतृत्वकर्ता के व्यक्तित्व को दर्शाते हैं—

खुलापन— नए अनुभवों को प्राप्त करने के लिए सदैव तैयार रहना।

कर्तव्य-निष्ठा— अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहना और दूसरों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखना।

सहमतता— सभी साथियों का विश्वास जीतने की क्षमता होना।

बहिर्मुखता— अपने विचारों को व्यक्त करके समूह को सहमत कराने की कला।

मनोविक्षुब्धता— अपने भविष्य की घटनाओं के प्रति सजग एवं संवेदनशील रहना।

खुलापन— नेतृत्व के उद्देश्य से कार्य करने के लिए अपने मस्तिष्क को सदैव खुला रखना आवश्यक होता है। जिस प्रकार ज्ञान को आत्मसात करने के लिए सहज और सरल रहना आवश्यक होता है, उसी प्रकार नए युग में नए आविष्कारों को जानना, उन्हें अपनाना और व्यवहार में लाना 'खुलापन' कहलाता है। यदि संस्था प्रमुख के साथ शिक्षक साथी भी नई योजनाओं और नवाचारों को अपनाने में उत्साहित रहते हैं, तो वे शासन एवं विभाग की योजनाओं को खुले दिल से स्वीकार कर उन्हें सफलतापूर्वक कार्यान्वित कर सकते हैं। इसी तरह, शिक्षकों को विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा से जोड़ते हुए पारंपरिक कथाओं और संदर्भों के माध्यम से विषयवस्तु को समृद्ध करना चाहिए।

उदाहरणस्वरूप, पंचतंत्र की कहानियों का विषयवस्तु से जोड़कर उपयोग करना सार्थक होता है। इससे न केवल विद्यार्थी विषय को आसानी से समझते हैं, बल्कि नैतिक मूल्यों को भी आत्मसात करते हैं, जो उनके आचरण में दीर्घकाल तक प्रतिबिंबित होते हैं।

एक प्यासा कौआ घड़े में कम पानी देखकर उसमें कंकड़ डालता है और पानी ऊपर आ जाता है, वह संतोषपूर्वक पानी पीता है। 20वीं शताब्दी की नई कहानी में कौआ पानी पीने के लिए स्ट्रॉ का उपयोग करता है – नई युक्ति से लाभ मिलता है। 21वीं शताब्दी की कहानी में कौआ तकनीक का प्रयोग करता है जिससे उसे पानी ऊपर दिखाई देता है और वह उपयुक्त साधन से पानी पी लेता है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि नई तकनीकें एवं नया ज्ञान जीवन को सरल एवं सहज बनाने के साथ-साथ नई दिशा भी प्रदान करते हैं। व्यक्तित्व में 'खुलापन' नए कार्यों को स्वीकारने की क्षमता को विकसित करता है।

कर्तव्य-निष्ठा— मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसे अकेले रहना पसंद नहीं होता। बचपन से ही वह पहले परिवार, फिर मित्रों और स्कूल-कॉलेज में अपने साथियों के साथ रहकर ज्ञान व संस्कृति अर्जित करता है। नेतृत्वकारी भूमिका में एक परिपक्व व्यक्ति विद्यालय की समस्याओं का समाधान खोजने हेतु संसाधनों की तलाश करता है। यदि उसमें कर्तव्य-निष्ठा के साथ-साथ सहमतता और खुलापन भी हो, तो वह दूसरों के विचारों को आत्मसात करते हुए नई योजनाओं के क्रियान्वयन में सफल हो सकता है। ऐसा नेतृत्व विद्यालय के समग्र विकास में सहायक होता है।

सहमतता— उदाहरणस्वरूप, ऋषि सुनक एक सामान्य पंजाबी खत्री परिवार से हैं, जिनके पिता चिकित्सक और माता फार्मेसी चलाने वाली थीं। बचपन में शर्मीले स्वभाव के ऋषि सुनक ने कला एवं प्रबंधन में उच्च शिक्षा प्राप्त कर वैश्विक राजनीति

में एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त किया। लॉकडाउन के समय उनके नवाचारपूर्ण निर्णयों के कारण ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था स्थिर बनी रही। इसी के परिणामस्वरूप वे यूनाइटेड किंगडम के प्रधानमंत्री बने। इससे यह स्पष्ट होता है कि यदि कोई संस्था प्रमुख अपने नेतृत्व में ऐसी योजनाएँ क्रियान्वित करे जिससे सभी को लाभ मिले, तो उसका नेतृत्व लंबे समय तक स्थायी व प्रभावशाली बन सकता है।

बहिर्मुखता— बहिर्मुखता वह गुण है जिसमें व्यक्ति स्वतंत्र अभिव्यक्ति की प्रवृत्ति रखता है और अन्याय या कुरीतियों के विरुद्ध मुखर रूप से आवाज उठाता है। उदाहरणस्वरूप, राजा राममोहन राय ने सती प्रथा और बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं के विरुद्ध आवाज उठाई और भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत बने। उनके प्रयासों से 1929 में बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम पारित हुआ।

इसी तरह, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने न केवल भारत को मिसाइल तकनीक में आगे बढ़ाया, बल्कि उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरणा दी कि—

"सपने वो नहीं होते, जो आप सोने के बाद देखते हैं, सपने वो होते हैं, जो आपको सोने नहीं देते।"

यदि शिक्षक और संस्था प्रमुख विद्यार्थियों को अपने सपनों के प्रति संवेदनशील बनाएँ, सामाजिक कुरीतियों का विरोध करना सिखाएँ और चुनौतियों के समाधान हेतु नवाचारों की ओर प्रेरित करें, तो शिक्षा वास्तव में सार्थक हो सकती है।

मनोविक्षुब्धता— यह एक मानसिक दशा है जिसमें व्यक्ति नकारात्मक सोच से ग्रस्त होता है और अपने आस-पास की घटनाओं पर प्रतिक्रिया नहीं करता। ऐसे व्यक्ति में व्यग्रता, अवसाद और आत्म-केंद्रितता देखी जाती है। उदाहरणस्वरूप, यदि किसी का घर जल जाता है और वह परिवार बेसहारा हो जाता है, तो उसकी सहायता के लिए संवेदनशील होना और उसके लिए सामाजिक मंचों पर आवाज उठाना एक अच्छे मानसिक स्वास्थ्य की निशानी है, परंतु जो व्यक्ति इस तरह की पीड़ा को महसूस न करे, वह 'मनोविक्षुब्धता' की स्थिति में होता है। ऐसे लोगों को काउंसलर और मनोचिकित्सक की सहायता की आवश्यकता होती है।

एक संस्था प्रमुख को अपने मानसिक संतुलन को बनाए रखना आवश्यक है। यदि वह स्वयं अस्थिर रहेगा, तो इसका प्रभाव पूरे विद्यालय और शिक्षकों पर पड़ेगा, जिससे विद्यालय की प्रगति बाधित हो सकती है।

अच्छे लीडर की पहचान

अपने साथियों की कोर दक्षताओं की पहचान करना— एक लीडर के रूप में प्राचार्य अपने साथियों की क्षमताओं से भलीभाँति परिचित होता है और उनकी योग्यता के अनुरूप विद्यालय में शैक्षणिक कार्यों के अतिरिक्त अन्य जिम्मेदारियाँ सौंपता है। यदि किसी शिक्षक में मंच संचालन की दक्षता है, तो उसे वार्षिक उत्सव, सभा संचालन, घोषणाएँ आदि गतिविधियाँ सौंपी जाती हैं।

जिस कार्य को करने में रुचि हो, वह कार्य न केवल उत्कृष्ट ढंग से सम्पन्न होता है, बल्कि पूर्ण उत्साह के साथ समय पर भी पूरा होता है। जैसे— यदि किसी

विद्यार्थी की रुचि खेलों में है, तो वह ग्राउंड की सफाई, नेट लगाने जैसे कार्यों को तत्परता से करता है। जब वही विद्यार्थी भविष्य में खेल को करियर के रूप में अपनाता है, तो वह उस क्षेत्र में श्रेष्ठता प्राप्त करता है और राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर तक पहुँच सकता है।

हम सभी ने कछुआ और खरगोश की कहानी सुनी है। इस कहानी में एक नया दृष्टिकोण यह भी है कि जब खरगोश पुनः कछुए से दौड़ में हार जाता है, तो वह प्रस्ताव देता है कि अगली बार वे एक साथ दौड़ें। इस तरह दोनों मिलकर जीतते हैं, क्योंकि कछुआ नदी पार करता है और खरगोश मैदान में तेजी से दौड़ता है। इस कहानी से यह स्पष्ट होता है कि नेतृत्व केवल आगे बढ़ने का नाम नहीं, बल्कि सामूहिक प्रयास से आगे बढ़ने की रणनीति भी है।

अतः प्राचार्य एवं शिक्षक को विद्यार्थियों की कोर दक्षताओं की पहचान कर, उनके अनुरूप कार्य देना चाहिए, जिससे उनकी प्रतिभा का सर्वश्रेष्ठ उपयोग हो सके।

संबंध निर्माण क्षमता और टीम निर्माण— एक सक्षम संस्था प्रमुख अपने सहकर्मियों के साथ सहयोगपूर्ण व्यवहार करते हुए टीम भावना का निर्माण करते है। नेतृत्वकर्ता में सहृदयता और विनम्रता जैसे गुण होने चाहिए, जिससे वह अपने निर्णयों को सहजता से लागू कर सके। छोटे-छोटे प्रोत्साहनपूर्ण शब्द, जैसे— "आप बहुत अच्छा कर रहे हैं", "आप पर हमें गर्व है"— कर्मियों में आत्मविश्वास एवं उत्साह बढ़ाते हैं।

रामायण कालीन प्रसंग में यदि श्रीराम ने वानर सेना का मनोबल नहीं बढ़ाया होता, तो संभवतः रामसेतु का निर्माण नहीं हो पाता। अतः संबंध निर्माण, विश्वास और सहयोग की भावना टीम निर्माण की नींव होती है।

स्फूर्ति और अनुकूलता— एक लीडर को समय के अनुरूप स्वयं को अद्यतन रखना चाहिए। उसे तकनीकी दक्षता के साथ-साथ नवीन सूचनाओं को ग्रहण करने में तत्पर होना चाहिए। जैसे— इंटरनेट, शैक्षिक ऐप्स, ई-सामग्री आदि का उपयोग कर वह विद्यालय में शैक्षणिक परिवेश को नवाचारों से युक्त कर सकता है। वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन का सूत्र $E = mc^2$ भी इसी रचनात्मक जिज्ञासा और प्रयोगशीलता का परिणाम था। इस प्रकार स्फूर्ति और अनुकूलता नेतृत्व को प्रगतिशील बनाते हैं।

नवाचारी एवं सृजनात्मक— वर्तमान युग नवाचार और सृजनात्मकता का है। चिकित्सा क्षेत्र में आज जटिल सर्जरी, जैसे— हृदय प्रत्यारोपण, लीवर ट्रांसप्लांट— रोबोट्स के माध्यम से संभव हो रही हैं। यह सभी नवाचारी प्रयास हैं। इसी प्रकार, विद्यालय प्रमुख यदि शिक्षकों और विद्यार्थियों में रचनात्मकता को बढ़ावा दे, तो वे न केवल जिज्ञासु बनते हैं, बल्कि समस्याओं का समाधान भी नवीन दृष्टिकोण से खोज पाते हैं।

प्रेरित स्वभाव— एक प्रेरक नेतृत्वकर्ता अपने साथियों को प्रेरित करने के लिए रचनात्मक गतिविधियाँ आयोजित करता है। उदाहरण के लिए, नववर्ष के आरंभ में सभी को टास्क वाली पर्चियाँ देना, जिनमें छोटे-छोटे रचनात्मक कार्य लिखे हों, जैसे— किसी विद्यार्थी या सहकर्मी की सराहना करना, किसी

की सहायता करना आदि। यह प्रयास संस्थान में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है।

निर्णय लेने की क्षमता— नेतृत्वकर्ता को सामूहिक सहभागिता के साथ निर्णय लेना चाहिए। किसी एक समस्या पर विभिन्न विकल्पों पर चर्चा करना, उनके संभावित परिणामों का विश्लेषण करना, और फिर सामूहिक सहमति से निर्णय लेना — यह एक प्रभावी नेतृत्व की पहचान है।

मानसिक टकराव प्रबंधन— कभी-कभी संस्था में व्यक्तिगत कारणों से मानसिक असंतुलन की स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। ऐसे समय में नेतृत्वकर्ता को सहानुभूति, धैर्य और उचित मार्गदर्शन से स्थिति को संभालना होता है। तनाव प्रबंधन हेतु योग, ध्यान, परामर्श जैसी गतिविधियाँ उपयोगी होती हैं।

विवादों का समाधान— विद्यालय प्रमुख को अनेक बार बाहरी संस्थाओं, जैसे— नगर निगम, ग्राम पंचायत, बैंक अधिकारियों आदि से वार्ता करनी पड़ती है। विद्यालय भूमि पर निर्माण कार्य हो या फंड ट्रांसफर— प्रत्येक कार्य में वित्तीय नियमों और संवाद कौशल की आवश्यकता होती है। ऐसे में लीडर को प्रभावी संवाद एवं समाधान कौशल अपनाने होते हैं।

गंभीर विचारधारा— नेतृत्वकर्ता को सामाजिक व पर्यावरणीय विषयों पर गहराई से चिंतनशील होना चाहिए। यदि जल की गुणवत्ता पर संकट है, तो शिक्षक एवं पालक समुदाय को साथ लेकर उसका समाधान खोजना चाहिए। इस प्रकार की गंभीर सोच संस्था को एक सतत और उत्तरदायी शैक्षणिक संस्था बनाती है।

निष्कर्ष

विद्यालयी शिक्षा में नेतृत्व एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है, जो न केवल विद्यालय की गुणवत्ता को प्रभावित करता है, बल्कि विद्यार्थियों, शिक्षकों, समुदाय और समग्र शैक्षिक परिवेश को भी दिशा प्रदान करता है। एक प्रभावी नेतृत्वकर्ता शिक्षकों की कोर दक्षताओं की पहचान करता है, टीम भावना का निर्माण करता है, और विद्यालय में समावेशी, बाल-केंद्रित और नवाचारी परिवेश की स्थापना करता है। वह बच्चों के अनुभवों को अधिगम से जोड़ने, समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करने, वित्तीय प्रबंधन तथा प्रशासन से समन्वय जैसे अनेक कार्यों को संतुलित रूप से संचालित करता है। नेतृत्व में खुलेपन, कर्तव्यनिष्ठा, बहिर्मुखता और सृजनशीलता जैसे गुण उसकी सफलता की कुंजी होते हैं।

उदाहरणस्वरूप, मनमोहन विश्वकर्मा द्वारा ग्रामीण विद्यालय में नवाचारों, समुदाय सहभागिता और तकनीकी संसाधनों के प्रभावी उपयोग से विद्यालय का कायाकल्प किया गया, जो नेतृत्व की परिवर्तनकारी शक्ति को दर्शाता है। इस प्रकार, एक सक्षम विद्यालय प्रमुख न केवल शिक्षण-अधिगम में गुणात्मक सुधार लाता है, बल्कि समाज में शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और विश्वास भी स्थापित करता है। अतः नेतृत्व शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ है, जो विद्यालय को एक जीवंत और प्रेरक अधिगम संस्था में रूपांतरित करता है।

केस स्टेडी— एक अनुभव

(चुनौतियों का सामना करने में नेतृत्व)

मनमोहन विश्वकर्मा, *प्राचार्य*, शासकीय माध्यमिक विद्यालय गेहूखेड़ी, नरसिंहगढ़, राजगढ़, मध्य प्रदेश

परिचय

ऐसा विद्यालय जहाँ अभिभावकों का सकारात्मक सहयोग नहीं था और विद्यालय में बच्चों को पढ़ाने में उनकी रुचि नहीं थी। अधिकांश लोग खेती और मजदूरी के कार्यों में संलग्न थे। निर्माण, शिक्षकों के स्कील डेवल्पमेंट और सह-शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से सीखने का रुचिपूर्ण वातावरण बनाना मुझे सबसे आवश्यक लगा।

प्रारंभिक चुनौतियाँ

कीचड़ युक्त विद्यालय तक पहुँचने का मार्ग, गड्ढा-युक्त खेलने का मैदान, शौचालय में पानी का अभाव, शैक्षणिक, अकादमिक समझ में कमी।

इन चुनौतियों का समाधान करने की रणनीति तैयार की गई जिसमें अभिभावकों का विश्वास प्राप्त होने के बाद ही अच्छी शिक्षा व्यवस्थाओं की बजट व्यवस्था और प्रयोगात्मक रूप से सामूहिक कार्य करने की योजना तैयार की गई। शिक्षकों की भूमिका और सहयोग से कार्यों को कैसे सफल किया जाए। इस पर शिक्षकों के साथ विद्यार्थियों के छोटे-छोटे समूह तैयार किए गए और एक समूह को एक कार्य सौंपा गया। समूहों में कार्यों का बँटवारा शिक्षकों की रुचि के अनुसार किया गया।

क्या-क्या काम किए गए

- एक समूह के निरीक्षण में विद्यालय के गड्ढे की भराई का जिम्मा सौंपा गया और रोड बनाने के लिए पंचायत और नगर पालिका से संपर्क किया गया। जिसमें अधिकारियों के सहयोग से विद्यालय आने के मार्ग को पक्का किया गया और खेल का मैदान बनके तैयार हो गया।
- ग्रामीण परिवेश में सभी घरों में कितने अभिभावकों के पास स्मार्ट मोबाईल उपलब्ध हैं, कितने घरों में इंटरनेट की उपलब्धता है। इसके लिए विद्यार्थियों से एक सर्वे कराया गया और उस सर्वे के आधार पर इन ऐसे घरों के विद्यार्थिंयों के लिए कुछ निःशुल्क ऐपलिकेशन ओपन सोर्स बेवसाइट को चलाने का तरीका बताया गया और एक ऐपलिकेशन, जैसे भूगोल पढ़ने के लिए 'मार्बल', मार्बल का उपयोग, जियो 'जेब्रा' से गणित पढ़ने तथा फेट एप से विज्ञान पढ़ने के लिए प्रेरित किया और कक्षा में क्विज, उत्कृष्ट, श्रेष्ठ जैसी श्रेणियों में विद्यार्थियों को अकादमिक खेल प्रतियोगिएँ कराई गईं और सीखने का उचित वातावरण बनाया।

- टेक्नोलॉजी के प्रयोग के साथ टी.एल.एम. निर्माण करके बच्चों को उत्साहित करने और अपनी हेंड्सऑन गतिविधियाँ करने की कला के लिए अलग समूह में कार्य कराए गए और इन सबसे यह परिणाम प्राप्त हुआ कि जो विद्यार्थी तकनीकी रूप से नहीं सीख सकते थे। उन्हें टी.एल.एम. के प्रयोग से सीखना आसान किया गया।
- 'तारे जमीं पर' जैसी फिल्मों को दिखाकर प्रश्न किए गए और उनके सटीक उत्तर प्राप्त करते हुए विद्यार्थी टेबलेट आधारित वीडियों, कहानियों से शिक्षा प्राप्त करने लगे और बच्चों को अपने प्रोजेक्ट्स तैयार करने में भी ऑडियो-वीडियो का उपयोग करना आने लगा।
- बाल दिवस पर 'नाप-तौल' मेले का आयोजन किया गया जिसमें मम्मीजी, दादीजी को आमंत्रित करके गणितीय प्रक्रियाओं से सब्जी बेचने में लेन-देन करना, तराजू से तौलना और बाँटों का सही उपयोग करना बताया गया। साथ ही अच्छे पोषण के लिए अलग-अलग साग सब्जियों के बारे में जानकारी दी गई, पालकों से चर्चा करके बच्चें की प्रगति बताने का भी यही समय प्राचार्य को मिल गया और विद्यालय में छोटे समाज का वातावरण निर्मित हुआ।